International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विषय–चयन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन

डॉ. मीनाक्षी शर्मा[1], रजनी जाट[2]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज
[2]बी. एड. एम. एड. छात्रा बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज

सारांश

यह अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा किए जाने वाले विषय–चयन को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों की पहचान और विश्लेषण करने के उद्देश्य से किया गया है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में विषय चयन विद्यार्थियों के भविष्य को निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस शोध में विषय चयन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों जैसेव्यक्तिगत रुचि, माता–पिता एवं शिक्षकों का प्रभाव, सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ, साथियों का प्रभाव, और उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन किया गया।शोध के लिए 100 विद्यार्थियों (50 लड़के और 50 लड़कियाँ) को सरकारी एवं निजी विद्यालयों से जयपुर जिले में चयनित किया गया। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को अनुसंधान की विधि के रूप में अपनाया गया। डेटा संकलन के लिए एक स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, जिसमें विद्यार्थियों से उनके विषय चयन के कारणों से संबंधित प्रश्न पूछे गए। एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति और प्रतिशत विधियों से किया गया।शोध के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों के विषय चयन में सबसे अधिक प्रभाव माता–पिता और शिक्षकों का पड़ता है, जबकि कुछ मामलों में समान आयु समूह और रोज़गार संभावनाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों और अभिभावकों को विषय चयन प्रक्रिया को बेहतर समझने और विद्यार्थियों को उपयुक्त मार्गदर्शन देने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

प्रस्तावना

शिक्षा सब के लिए और सब शिक्षा के लिए है। इस विचार के अनुसार प्रत्येक बालक को शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। लेकिन इसके साथ यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक बालक को उसकी योगयता व बुद्धि के आधार पर शिक्षित किया जाए। वर्तमान में कई नए विषयों का प्रसार हुआ है। इन विषयों को विद्यालयों में पढ़ाया जाता है। लेकिन सभी छात्रों की रूचि तथा योग्यता इन विषयों को पढ़ने के लिए नही होती है। इसका मुख्य कारण छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता होता है। अतः व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर पाठ्यक्रम का चुनाव किया जाना चाहिए। इस हेतु विषय–चयन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन आवश्यक है। विषय–चयन के दौरान विद्यार्थी स्वयं को विश्लेषण तो करता ही है अर्थात् अपनी योग्यताओं तथा क्षमताओं के विषय में जाानने का प्रयास करता है। वस्तुतः विद्यार्थी को विषय–चयन करते समय आत्म–विश्लेषण अवश्य करना चाहिए।

विषय–चयन को प्रभावित करने वाले घटक कौन–से है, जिनको ध्यान में रखकर विद्यार्थी अपने अध्ययन के लिए विषय या संकाय का चयन करते है। क्या वे अपनी रूचि के अनुसार संकाय या विषयों को चुनाव करते है, क्या उनके द्वारा चयनित विषय या संकाय का उनके भावी जीवन में प्रस्तावित व्यवसाय से कोई सम्बंध है। अपने विषय या संकाय का चुनाव अपने माता–पिता , मित्र या अध्यापक आदि से प्रभावित होकर करते है। क्या वे विषय–चयन प्रक्रिया के समय अभिभावकों व विद्यालय परामर्शदाता से निर्देशन प्राप्त करते है। विद्यार्थी उच्च माध्यमिक स्तर पर विषय का चुनाव इसलिए करते है कि अधिकांश साथी उस विषय को लेकर पढ़ रहे है या उस संकाय के विषय के अध्ययन में उपलब होने वाली भावी उन्नतियाँ प्रभावित होती है। ये कुछ ऐसे

प्रश्न है, जिनका समाधान ढूंढा ही जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों का अध्ययन सम्पूर्ण बन सकें। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विषय–चयन को प्रभावित करने वाले कारक या घटक को जानने हेतु इस शोध की योजना तैयार की गई।

समस्या का औचित्य :–
शोध एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। उद्देश्य जितने सुनियोजित व स्पष्ट होंगे उन पर आधारित कार्य भी उतना ही सुनियोजित होगा। प्रस्तुत अध्ययन को सुनियोजित ढंग से पूरा करने हेतु शोधकर्त्ता ने निम्न उद्देश्य को निर्धारित किया है।

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के समक्ष उपयुक्त विषयों के चयन की कठिन समस्या होती ह। विषयों की अनेकता तथा विशिष्टीकरण के कारण भी विषयों का चयन अत्यधिक कठिन हो गया है। अतः इस स्तर पर विद्यार्थियों के विषय–चयन की अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य –
शोध के उद्देश्य निम्नानुसार है –

1. सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के विषय–चयन को प्रभावित करने वाले कारकों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. लिंग–भेद के आधार पर विषय–चयन कारकों का तुलनात्मक अध्ययन

परिकल्पनाएँ –
प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी हैं –

1. सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की माध्यमिक स्तर पर विषय–चयन के कारकों के प्रति सार्थक अंतर नही पाया जाता है।
2. सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की माध्यमिक सतर पर विषय चयन के कारकों के प्रति सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

1. **तेजपाल सिंह भैरूपुरा (2023)** –स्वयं शोधकर्त्ता ने जयपुर में ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के छात्र छात्राओं पर शोध किया जिसमें माता–पिता (अभिभावक) मित्र व अध्यापक आदि का हस्तक्षेप पाया गया। स्वयं 5 प्रतिशत ही निर्णय लेने वाले पाये गये।
2. **सुधा शर्मा (2022)** –प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार का विद्यालय वातावरण व विद्यार्थियों के विषय चुनाव पर प्रभाव का अध्यापन किया। शर्मा ने बताया कि प्रधानाध्यापक का नेतृत्व व्यवहार का सीधा प्रभाव विद्यालय व विद्यार्थियों के विषय–चयन पर पडता है।
3. **चक्रवर्ती मानव (2021)** –पश्चिमी बंगाल में सैकण्डरी विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन व इसका विषय–चयन संबंधित चरों के साथ संबंध का अध्ययन किया। चक्रवती ने पाया कि विद्यालय अनुकूल वातावरण का निर्माण छात्रों के व्यक्तिगत व उनके उच्च माध्यमिक स्तर के विषयों के प्रति सार्थक प्रभाव पडता है।
4. **उर्मिला सिंह (2016)** –''सैकेण्डरी विद्यालय अध्यापकों की विषय–चयन में भूमिका'' पर अध्ययन किया।
5. **जी.एस. गुप्ता** –कांगड़ जिले के छात्रों पर शोध द्वारा निष्कर्ष प्राप्त किया कि 55 प्रतिशत छात्र विषय–चयन के लिए माता–पिता से मार्गदर्शन प्राप्त करते हैा, 32 प्रतिशत छात्र स्वयं निर्णय लेते है, 2.5 प्रतिशत छात्र अपने अध्यापक के मार्गदर्शन पर निर्भर करते है तथा 2 प्रतिशत अपने माता पिता या अभिभावक के धंधे में निर्देशित होते है।

शोध अंतर

- **सीमित भौगोलिक क्षेत्र** दृ यह अध्ययन केवल जयपुर जिले के विद्यार्थियों तक ही सीमित है, जिससे इसके निष्कर्ष अन्य क्षेत्रों जैसे ग्रामीण या अन्य राज्यों पर सामान्यीकृत नहीं किए जा सकते।
- **गहराई से विश्लेषण का अभाव**दृ यद्यपि अध्ययन में कई कारकों (अभिभावक, मित्र, अध्यापक, स्वयं की रुचि आदि) को सम्मिलित किया गया है, किन्तु प्रत्येक कारक के अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभावों का गहराई से विश्लेषण नहीं किया गया।
- **शैक्षणिक प्रदर्शन या करियर परिणाम के साथ संबंध दृ**अध्ययन में विषय चयन के कारकों को तो पहचाना गया है, लेकिन इन चयनित विषयों का छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि या भविष्य के करियर पथ पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन नहीं किया गया।
- **शहरी और ग्रामीण विद्यालयों की तुलनात्मक समीक्षा सीमित दृ** यद्यपि शहरी और ग्रामीण विद्यालयों को शामिल किया गया है, लेकिन उनके सामाजिक–सांस्कृतिक भिन्नताओं के कारण उत्पन्न प्रभावों पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया।
- **लिंग आधारित विश्लेषण की गहराई नहीं दृ** अध्ययन में लड़के और लड़कियों दोनों को शामिल किया गया है, लेकिन लैंगिक अंतर के कारण निर्णय प्रक्रिया में आने वाले भिन्नताओं का गहराई से अध्ययन नहीं किया गया।
- नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (छम्ब् 2020) के प्रभाव का अभाव दृ इस अध्ययन में छम्ब् 2020 जैसे नवीन शैक्षणिक सुधारों के संदर्भ में विषय चयन पर उनके संभावित प्रभाव को नहीं जोड़ा गया है।
- **गुणात्मक शोध की कमी दृ** अध्ययन मुख्यतः मात्रात्मक है। साक्षात्कार या केस स्टडी जैसे गुणात्मक तरीकों का उपयोग नहीं किया गया, जिससे विद्यार्थियों के विचारों और अनुभवों को प्रत्यक्ष रूप से नहीं समझा जा सका।

शोध विधि– शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श–न्यादर्श के रूप मे 60 छात्र–छात्राएं सरकारी तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थी हैं, जिनमें 30 छात्र छात्रा निजी विद्यालय के व 30 छात्र–छात्राएं सरकारी विद्यालय के है।

उपकरण– प्रस्तुत शोधकार्य में प्रदत्तों के संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित अभिवृत्त मापनी उपकरणों का प्रयोग किया गया है ।

सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थी

चर	संख्या	मध्यमान	(S.D.)	t मान	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालयों के छात्र	*50*	*39.48*	*0.74*	*1.15*	*0.05*
निजी विद्यालयों के छात्र	*50*	*37.8*	*0.72*	*1.15*	*0.01*

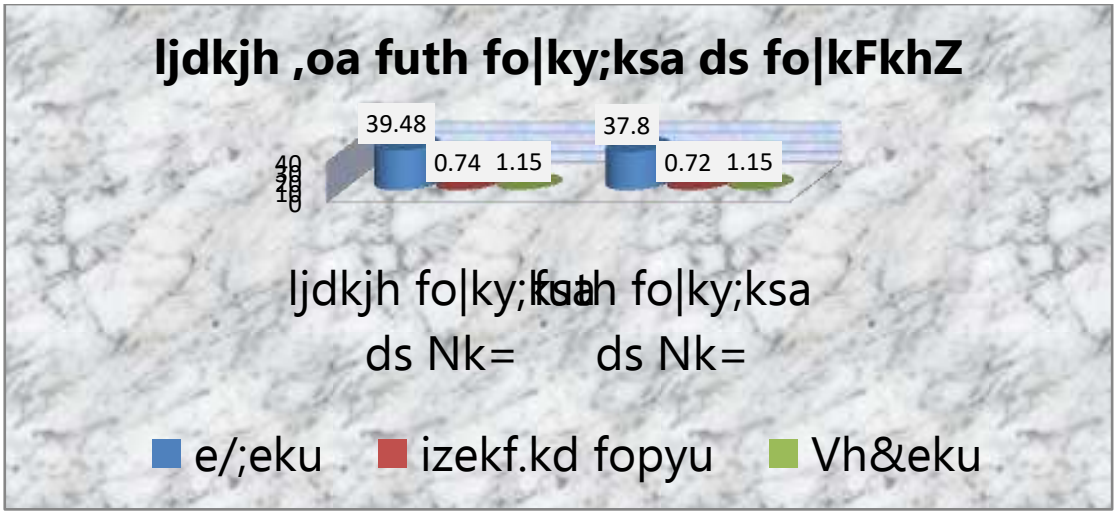

व्याख्या एवं विश्लेषण

तालिका संख्या 4.1 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की माध्यमिक स्तर पर विषय चयन के कारकों की जांच में प्राप्त प्राप्तांकों को अध्ययन क्रमशः 39.48 व 37.8 है तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 0.74 व 0.72 है सांख्यिकीय गणना करने पर प्राप्त 'ज' मूल्य 1.15 है जो की कि 98 पर सांख्यिकी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.98 से कम है तथा 0.01 स्तर पर 42 2.63 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है कि सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की माध्यमिक स्तर पर विषय चयन के कारकों के प्रति सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 4.2 सरकारी एवं निजी विद्यालय के छात्र

चर	*संख्या*	*मध्यमान*	*(S.D.)*	*t मान*	सार्थकता स्तर
सरकारी के विद्यालय छात्र	*25*	*39.92*	*0.98*	*0.97*	*0.05*
निजी के विद्यालय छात्र	*25*	*38.08*	*0.91*	*0.97*	*0.01*

व्याख्या एवं विश्लेषण

तालिका संख्या 4.2 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की माध्यमिक स्तर पर विषय चयन के कारकों की जांच में प्राप्त प्राप्तांकों को अध्ययन क्रमशः 39.92 व 38.08 है

तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 0.98 व 0.91 है सांख्यिकीय गणना करने पर प्राप्त 'ज' मूल्य 0.97 है जो की कि 48 पर सारणीय मूल्य 0.05 स्तर पर 2.01 से कम है तथा 0.01 स्तर पर 2.68 से कम है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है कि सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की माध्यमिक स्तर पर विषय चयन के कारकों के प्रति सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिणाम

ग्रामीण एवं शहरी छात्र एवं छात्राओं की दृष्टि से पृथक–पृथक विचार करे तो ज्ञात होता है कि विषयों में रूचि प्रथम स्थान पर तथा परिवार के सभी बड़े सदस्यों द्वारा इन विषयों के लिए राय दूसरे स्थान पर महत्वूपर्ण है। छात्र तथा शहरी उत्तरदाता विषयों पर आधारित भावी उन्नति को तीसरे स्थान पर महत्वपूर्ण मानते है।छात्र एवं छात्राओं तथा ग्रामीण एवं शहारी उत्तरदाताओं के अनुसार पृथक–पृथक विचार करने पर प्रथम स्थान पर विषयों में रूचि तथा दूसरे स्थान पर परिवार के बड़े सदस्यों की राय महत्वूपर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. (2010). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन .
[2]. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2006). शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर
[3]. पी. एवं गर्ग, एस. (2016). भारत में शिक्षा : स्थिति, समस्याऐं एवं मुद्दे. अग्रवाल पब्लिकेशन
[4]. एस. (1995). शैक्षिक तकनीकी. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा रूप रेखा, राष्ट्रीय. नई दिल्ली : शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2005.
[5]. पाल,हंसराज (2006), प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निर्देशालय, नई दिल्ली
[6]. पाल, हंसराज एवं शर्मा, मंजुलता (2007). प्रतिभाशालियों की शिक्षा .नई दिल्लीः क्षिप्रा पब्लिकेशन्स
[7]. डेय, के एवं श्रीवास्तव, एस. (2007). शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्लीः टाटा मेग्राहिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेडपाठक,
[8]. पी.डी. (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2
[9]. शर्मा, आर. ए. (2004), शिक्षा अनुसंधान. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
[10]. शर्मा, आर. ए. (2005), अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
[11]. शर्मा, आर. ए. (2005), शिक्षा तथा मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी अनुसंधान. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
[12]. शर्मा, आर. ए. (2005), शैक्षिक एवं मानसिक मापन. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ